राजनीति, राष्ट्रवादी चिंतन और सिनेमा

ज़िले सिंह चौधरी

राजनीति विज्ञान, सत्यवती कालेज सांध्य, दिल्ली विश्वविद्यालये

समाज के सभी स्तरों के लोगों को एकत्र लाकर उन्हें प्रभावित करने का माध्यम है- सिनेमा| आज के दौर में सिनेमा से परहेज करनेवालों की संख्या बहुत ही कम होगी। सिनेमा का दर्शक वर्ग बहुत बड़ा है। सिनेमा जात- पात धर्म के परे जाकर मनुष्य की चेतना को जगाने का काम करता है। इसके अंतर्गत अमीर हो या गरीब़, जवान या बुढा, स्त्री या पुरुष, शिक्षित या अनपढ़ सभी द्वारा वह पसंद किया जाता है। मनुष्य के जीवन से संबंधित सत्य घटना तथा कल्पना के आधार पर सिनेमा दर्शकों के सामने आता है और उन्हें प्रभावित करता है। सिनेमा की तरह उसके गीत भी लोगों के दिलों को छुते है और अपनी एक जगह बनाते है।

भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधकर एक दूसरे के क़रीब लाने का काम भी यह सिने गीत करते नजर आते है। जब हम हिन्दी सिने गीत परंपरा को याद करते हैं तब हमें पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा। भारतीय सिनेमा के आद्य जनक दादासाहब फालके ने 1912 में राजा 'हरिश्चंद्र' नामक मुक सिनेमा से भारतीय सिनेमा की नींव डाली। तब से लेकर अब तक यह सिनेमा अनेक उतार चढावों का सामना करते हुए आज अपने चरम शिखर पर पहुँच चुका है। 14 मार्च 1931 में मुंबई स्थित मेजेस्टीक थियेटर में 'आलमआरा' सिनेमा प्रदर्शित हुआ इसी सिनेमा के माध्यम हिन्दी सिने गीत परंपरा का आरंभ माना जाता है जो अब भी अपनी गति को प्राप्त किए हुए है। आज गीत सिनेमा के अनन्य अंग बन चुके है। गीतों के बीना सिनेमा फिक़ा पड़ जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कभी कभी सिनेमा की सफलता उसके गीतों पर निर्भर होती है।

सिनेमा की तरह ही गीत भी दिल जोड़ते है। देश-प्रदेश से सीमापार जाकर यह मनुष्य के बीच प्रेम अपनापन भाईचारे का सेतू बन जाता है। सिनेमा के गीत लोगों के होठों पर होते हैं। यह गीत कितनों को अपने जीवन में नयी राह दिखाते हैं। अपने जीवन में आये उतार चढ़ावों को भूलकर जीने की नयी उमंग पैदा करते है और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की प्रेरणा देते है। कवी प्रदिप, कैफी आझमी, साहिल लुधियानवी, आनंद बक्षी, समीर, हसरत जयपुरी, गुलजार, शैलेंद्र, जावेद अख्तर, इंदीवर आदि के नाम इस फेहरिस्त में आते है। जिन्होंने आज तक एक से बढ़कर एक यादगार सिने गीत हिन्दी सिनेजगत् को दिए है।

काव्य का एक महत्वपूर्ण प्रकार है देशभक्ति गीत। 1947 के बाद देशभक्ति से पूर्ण गीत हिन्दी सिने परदे पर दिखायी देने लगे। इसके पूर्व स्वतंत्रता संग्राम पर कितने ही देशभक्तिपर गीत रचे जा चुके थे जिन्होंने पहले से ही लोगों के दिलों पर कब्जा कर रखा था। कितने ही लोग केवल यह गीत सुनकर आजादी की लड़ाई में कुद पड़े थे। कितने ही गीत आजादी की चाहत लेकर लिखे गये। यह गीत बाद में सिनेमा में आये। यह गीत करोड़ों भारतीयों के दिल में देश भक्ति की चिंगारी भडकाने में काफी कामयाब रही। स्वतंत्रतापूर्व माधवजी शुक्ल व्दारा लिखा गया सन् 1929 में लिखा गीत काफी लोकप्रिय हुआ। ब्रिटिश शासन के खिलाफ लिखा गया यह गीत था। इस गीत के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रप्रेम, एकता की भावना तथा आजादी की ललक प्रकट की। और करोडों भारतीयो का दिल देशप्रेम से भर उठा।

मेरी भव रहे मेरा सर ना रहे, सामां न रहे ना ये सांझ रहे
और हिंद मेरा आजाद रहे..., मेरी माता के सरपर ताज रहे...
सिक्ख हिन्दू मुसलमां एक रहें, भाई भाई का रस्मे रिवाज रहे
मेरी पूजा रहे और नमाज रहे ।

सन् 1950 में 'समाधि' सिनेमा में आजाद हिन्द सेना की कहानी बयान की गयी है। वहीं 'बोस-ए फोरगोटन हिरो' सिनेमा में 'कदम कदम बढ़ाते जा' यह गीत काफी लोकप्रिय रहा। यह गीत सन् 1942 में लिखे गये इस गीत के रचयिता राम सिंह थे.

तू शेर ए हिन्द आगे बझ, मरने से कभी तू न डर
उड़ाके दुष्मनों का सर, जोश ए वतन बढाए जा

कदम कदम बढ़ाए जा... खुशी के गीत गाये जा
ये जिंदगी है कौम की, तू कौम पे लुटाते जा ।

इस गीत के माध्यम से कवि यहां हमारे स्वाभिमान को जगाते है। हमारे देश की रक्षा के खातिर अपनी जान की पर्वा किए बगैर हमें तत्पर रहना चाहिए यह संदेश इस गीत के माध्यम से दिया गया है। यह गीत हमारे अंदर देशभक्ति को जगाता है।

सन् 1940 प्रदर्शित 'बन्धन' यह सिनेमा प्रथम देशप्रेम पर आधारित सिनेमा है। इस सिनेमा में राष्ट्रकवि प्रदिप व्दारा रचित 'चल चल रे नौजवान' इस गीत में प्रखर रुप से देशभक्ति प्रकट होती दिखायी देती है। इसके पश्चात् कवि प्रदिप ने अनेक ऐसी रचनाएँ रची.

आज हिमालय की चोटी से हमने ललकारा है
दूर हटो ये दुनियावालो हिन्दुस्तान हमारा है ।

इस गीत के माध्यम से देशभक्ति की भवना सहज रुप से प्रकट की है। उसके पश्चात् अनेक देशभक्तिपर गीत रचे गये। सन् 1952 में 'आनंदनठ' सिनेमा प्रदर्शित हुआ। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के 'आनंदमठ' उपन्यास पर आधारित यह सिनेमा थ.। उन्होंने सन् 1870 में लिखा हुआ 'वंदे मातरम्' यह गीत इस फिल्म में लिया गया था उस समय बंगाल के स्वतंत्रता संग्राम में इस गीत ने काफी हलचल मचा दी थी। जब फिल्म में इस गीत को लिया गया तो यह पुरी दुनिया में लोकप्रिय हो गया। लता मंगेशकर के मधुर आवाज में गाया गया यह गीत आज भी भारतीयों के लिए प्रेरणादायी है।

'जनगनमन अधिनायक' यह गीत रवींद्रनाथ टागोर द्वारा लिखा गया गीत 'हमराही'(1947) सिनेमा में परा सुनने के लिए मिलता है। बाद में इसे राष्ट्रगीत का दर्जा प्राप्त हुआ। सन् 1947 में देश को आजादी मिलने के बाद आजादी की तमन्ना तो खतम हो चुकी थी पर चारों ओर खुशी की लहर बहने लगी थी। बहतर भविष्य के सपने देखे जाने लगे। 1947 में 'मजबूर' सिनेमा प्रदर्शित हुआ। इस सिनेमा के गीतों में राष्ट्रीय स्वर मुखर रुप से दृष्टिगोचर होता है जो इस प्रकार है-

अब नहीं है राज फिरंगी का, लो झंडा लगा तिरंगी का
अब नहीं जमाना तरंगी का, अब दिल में खुशियाँ आन वसी

अंग्रेजी छोरा चला गया ।

सन् 1954 में प्रदर्शित 'जागृति' सिनेमा भी देशप्रेम से ओतप्रोत सिनेमा है। कवी प्रदिप द्वारा रचित एक से बढ़कर एक सुंदर गीत इसमें दृष्टेगोचर होते है। 'आओ बच्चे तुम्हें दिखाये हम धरती हिन्दुस्थान की', 'हम लाये है तुफानसे कश्ती निकाल के', 'दे दी आजादी हमे बीना', 'साबर मती के संत तुने कर दिया कमाल' आदि इसके उदाहरण है।

सन् 1957 में प्रदर्शित नया दौर सिनेमा का गीत 'यह देश है वीर जवानों का' यह देशभक्ति गीत काफी लोकप्रिय हुआ। सन् 1962 में प्रदर्शित 'सन ऑफ इंडिया' सिनेमा का गीत 'नन्ना मुन्ना राही हू, देश का सिपाही हूँ' यह एक बच्चे व्दारा गाया हुआ गीत लोगों को दिल में देशप्रेम जगा गया। उसीप्रकार 'काबुलीबाला' (1961) का यह गीत

ए मेरे प्यारे वतन, ए मेरे बिछडे चमन
तुझपे दिल कुर्बान है ।

यह गीत यादगार साबित हुआ। कवि प्रदिप द्वारा रचित और एक यादगार गीत है 'ए मेरे वन के लोगों' सन् 1965 में भारत और चीन के बीच हुए युध्द में शहिद जवानों को समर्पित यह गीत था। इस गीत के माध्यम से कवि भारत चीन युध्द का दृश्य हमारे सामने प्रस्तुत करते है

थी खून से लथपथ काया, फिर भी बन्दूक उठाकर
दस दस को एक ने मारा, फिर गीर गये होश गंवाकर
जब अन्त समय आया तो, कह गये के अब मरते है
खुश रहना देश के प्यारों, अब हम तो सफर करते है

भारतीय वीर जवानों की शौर्यगाथा बयान करने वाला यह था। इस गीत की रचना के पश्चात् कवी प्रदिप को राष्ट्रकवि का दर्जा प्राप्त हुआ। इसी भारत चीन युध्द की पार्श्वभूमि पर बनाया गया औऱ एक सिनेमा जो सन् 1964 मं प्रदर्शित हुआ वह था 'हकिकत'। प्रस्तुत सिनेमा का गीत 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' भी यादगार रहा। यह गीत कैफी आजमी जीने लिखा था। इसी दौर में और कुछ लोकप्रिय देशभक्ति गीत है 'फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी', 'जिस देश में गंगा बहती है' इत्यादि। 1940-1980 तक का दौर हिन्दी सिनेमा का सुनहरा काल था। एक से बढ़कर एक देशभक्ति पर गीत सिनेमा में दिखने लगे। यह सभी गीत अर्थपूर्ण तथा भावप्रधान

तो थे ही साथ ही और एक प्रमुख वजह थी गायकों की दिल को छू लेनेवाली मधुर आवाज जिसके कारण यह गीत अमर हो गये।

1980 से लेकर अब तक हिन्दी सिनेमा में अनेक देशभक्तिपर गीत दृष्टिगोचर होते है। मुकेश लता मंगेशकर, मन्ना डे, मोहम्मद रफी, महेंद्र कपूर, किशोर कुमार, अनुराधा पौडवाल, उदीत नारायण, तलत महमूद, आशा भोसले तथा अन्य गोयकोंने अपनी मधुर आवाज में यह गीत प्रस्तुत किये। शुरुवाती दौर के गीतों में हमें भारतीय वाद्यों का उपयोग दिखायी देता है वहीं 80 के बाद भारतीय वाद्यों के साथ पाश्चात्य वाद्यों का संगम हमें दिखायी देता है।

1986 के पश्चात् 'कर्मा' नामक सिनेमा काफई लोकप्रिय हुआ। देशप्रेम की सीख देनेवाले इस सिनेमा का गीत 'दिल दिया है जान भी देंगे ए वतन तेरे लिए' यह गीत काफी लकप्रिय रहा। 1986 के पश्चात् 'नाम' सिनेमा प्रदर्शित हुआ। इस सिनेमा में पंकज उदास द्वारा गाया गया 'चिठ्ठी आयी है' यह गीत न केवल भारतीयों को बल्कि विदेश में रह रहे भारतियों के मन को भा गया। अपनी मातृभूमि की ओर लौटने का आवाहन प्रस्तुत गीत के माध्यम से किया गया है जैसे-

देस पराया छोड के आजा, पंछी पिंजरा छोड़के आजा
आजा उम्र बहुत है छोटी, अपने घर में भी है रोटी ।

सन् 1992 में प्रदर्शित 'रोजा' सिनेमा के गीतों ने दर्शकों के दिल पर राज किया। ए. आर. रहमान व्दारा संगीत और हरिहरन व्दारा गाये गये 'भारत हमको जान से प्यारा' यह गीत तत्कालीन युवाओं के मन में देशप्रेम के बीज बोने में कमियाब रहा। यह गीत काफी सराहा गया।

जन्मभूमि है हमारी, शान से कहेंगे हम
सबही तो भाई भाई, प्यार से कहेंगे हम ।

सरहद के पार जाकर यह गीत हमें भाईचारे की सीख दे गया।1990 के बाद हिन्दी सिनेमा का रंग ढंग बदलने लगा। पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकाव तथा आधुनिक तकनिक से परिपूर्ण सिनेमा बनने लगा। परंतु देशप्रेम का महत्व सिनेमा से व्यक्त होता रहा है। 1997 में आए 'दस'

सिनेमा पर इसका प्रभाव स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होता है। 'सुनो गौर से दुनियावालों..' यह गीत इसी पाश्चात्य संगीत तथा आधुनिक तकनिक का उदाहरण पेश करनेवाला गीत है।

सन् 1999 में 'सरफरोश' का 'जिंदगी मौत भी बन जाए' और 2000 के बाद 'फिर भी दिल है हिन्दुस्थानी' जैसे गीत भी देशप्रेम की भावना जगाते है। इसी दौर के कुछ और गीत है 'इंडियन' सिनेमा 'वतनवालों वतन ना..' यह गीत स्वतंत्रता संग्राम में शहीद जवानों के शौर्य का वर्णन करता है। तो सन् 2002 का 'माँ तुझे सलाम' यह गीत भी यही संदेश देता दिखायी देता है।

सन् 2004 में प्रदर्शित 'स्वदेश' यह सिनेमा आशुतोष गोवारीकर व्दारा देशप्रेम को नजरों के सामने रखकर निकाला गया सिनेमा है। नासा में काम करने वाला भारतीय नौजवान वैज्ञानिक की यह कहानी है। अपनी देश को अपनी जरुरत होने का अहसास जब उसे होता है तो वह दौडते हुए वतन की ओर लौटता है। यह नौजवान अपने देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम जगाने में कामियाब हो जाता है। उसमें जावेद अख्तर द्वारा लिखित यह गीत काफी लोकप्रिय रहा-

ये जो देश है तेरा, तुझे है पुकरा
यो वो बंधन है जो, कभी टूट न सकता ।

यह गीत देशभक्ति को उजागर करता है। 'फना' सिनेमा का 'देश रंगीला', रंग दे बसंती का 'रंग दे बसंती', मेरी कॉम का 'सलाम इंडिया', चक दे इंडिया का 'चक दे इंडिया' जैसे गीत भारतीवासी ही नहीं विदेशों में बसे भारतीयों के मन में अपने वतन और कौम के प्रति स्वाभिमान जगाते है।

सन् 1980 के बाद आशा भोसले, हरिहरन, शंकर महादेवन, शान, महालक्ष्मी अय्यर, दलेर महेंदी, कविता कृष्णमूर्ति, सुरेश वाडकर, ए.आऱ रहमान, सुखविंदर सिंह जैसे गीतकारोंने यह गीत अपनी आवाज में अमर कर दिए। 1980 के पूर्व लगभग सभी गीत यादगार बन गये। उसके बाद के कुछ गीत समय के साथ भुला दिये गये है। सिर्फ गिने चुने यादगार बने नजर आते है।

राष्टप्रेम, राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्रनिर्माण में इन गितों का महत्व अनन्य है। जात-धर्म-प्रदेश-भाषा की सिमाएँ लांघकर सभी भारतवासियों को एक छत के नीचे लाने का महान् कार्य इन गितों ने किया है। इसी प्रकार के गीत सिनेमा व्दारा अधिकाधिक निर्माण हो और अपना यह कार्य वह इसी प्रकर आगे बढाये यह सद्भावना ।

संदर्भ :

1. सिनेमा वक्त के आयने में- राजेमद्र सहगल
2. साहित्य औऱ सिनेमा- डॉ. जलिंदर इंगले
3. सिनेमा का सौंदर्यशास्त्र - पुरषोत्तम कुंदे
4. बिम्ब 2012-दिवाली अंक